शिवरात्रि (हेरात्रि) निर्णय

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

संपादक :—
ब्राह्मणमहामण्डल कश्मीर

प्रथम संस्करण
१०००
प्रमथ जनवरी १९५७

मूल्य ०—८—०

प्रकाशक :—राधा कृष्ण रैणा प्रकाशन मंत्री ब्राह्मणमहामण्डल कश्मीर

ब्राह्मणमहामण्डल कश्मीर

के

उद्देश्य

१. देश भक्ति तथा राज्यनिष्ठा ।

२. धर्म प्रचार ।

३. अनाथ-विधवा-उद्धार ।

४. जाति भेद मिटाना ।

५. राष्ट्रभाषा का प्रचार

६. भ्रष्टाचार का विरोध ।

७. समाज-सुद्धार ।

पुस्तक मिलने का पता :—

प्रधान कार्यालय

ब्राह्मणमहामण्डल कश्मीर,

गणेश रोड, श्रीनगर,

वटुक भैरव

कालमेघवपुश्यामः, भालेत्रिपुण्ड्रशोभितः। पाशांकुशसुधापात्र,फणिमालाविभूषितः

वरदाभयसंयुक्तो, डमरूहस्तःसनातनः । भैरवोवटुकःपायान, पीतवासःसुमेखलः ।

शुद्धि पत्र

पाठकों से निवेदन है, कि वे इस शुद्धि-पत्र के अनुसार निर्दिष्ट-स्थानों पर पहले संशोधन कर के फिर निर्णय को पढें।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
ख)	१६	(क्रमशः संध्या प्रदोष तथा अर्धरात्रि वेला को)	(क्रमशः प्रदोष तथा-अर्धरात्र वेला को)
,,	१८	त्रयोदशी तिथि के प्रदोष को प्रधान मानते हैं	त्रयोदशी तिथि के प्रदोष को और कभी संध्या को प्रधान मानते हैं
४	१६	सर्वा-कामान	सर्वान्कामान
,,	२२	समुद्धता	समुद्धूता
५	२	नवेद्य	नैवेद्य
६	१४	पुत्रकः	पुत्रक
६	१८	स्नान-भाण्डस्तु	स्नान-भाण्डांस्तु
११	१५	क्षेत्रेश को	क्षेत्रेशों को
१४	१	सूय	सूर्य
१४	६	यदि त्र दि हो	यदि द्वा दि त्र दि हो
१४	४	विशेष स्पर्श न करती हो	विशेष स्पर्श ($\frac{1}{4}$) का न-करती हो
२२	१४	दूसरे दिन सूर्य स्पर्श-विशेष युक्त होने से ही	दूसरे दिन सूर्य विशेष वा स्पर्श मात्र युक्त होने से ही
२२	१६	त्र शे ८	त्र शे १६
२३	१	द्वा शे ८ शे १३ प्र०-रार्ध १५	द्वा शे ८ त्र शे १३ प्र० १४ रार्ध १५
२८	८	सब विद्वत्परिषद्	सब विद्वत्परिषद्
३०	१३	ॐ शान्ति ३	ॐ शान्तिः ३

प्राक्कथन

"शिवरात्रि" तान्त्रिक व्रत है ! इस की पूजा का विधान भी तंत्रशास्त्रोक्त ही है। इस व्रत का नाम तंत्रशास्त्रों में हरराात्रि तथा भैरवोत्सव भी पाया जाता है। परन्तु कश्मीर में यह व्रत शिवरात्रि-नाम से ही प्रसिद्ध है। इस व्रत को भैरवोत्सव इस लिये कहा गया है, कि "भैरव" (शिव वा परमेश्वर) की पूजा का, उस के ज्वालारूप में प्रकट होने का, यह उत्सव है। जैसा कि आगे इस निर्णय में प्रकट किया गया है। तन्त्रशास्त्रों में "भैरव" शब्द शिव, परमेश्वर, देव तथा भगवान् का पर्यायवाची है और "भैरवी" शब्द उस की प्रकृति, देवी, माया, और शक्ति का वाचक है। इसी भैरवी तथा भैरव शब्द का अपभ्रंश कश्मीरी भाषा में "भ्रारी" तथा "भ्रारू" होना मालूम होता है जैसे "हार भ्रारी" हारी भैरवी या "राज्य-भ्रारी" राज्ञी भैरवी आज से ५० वर्ष पूर्व तक यहां कुमार जी को 'कुमार भ्रारू' भगवान् बुद्ध को 'बुद्धभ्रारू' कहा करते थे। आज कल

जो मंगलेश्वर, नन्दिकेश्वर वेताल आदि नामों के साथ भैरव शब्द मिलाया जाता है। मालूम होता है कि वह भक्तिवश उन को आदर देने के लिये है। अथवा शिव की शक्ति से उत्पन्न होने के कारण उन के अंश भूत मान कर उन्हें भैरव कहते हैं। तन्त्र शास्त्रों में इन्हें "गण" देवी गण वा भैरव के गण कहा है। आगे इनकी उत्पत्ति के विषय में जो कुछ लिखा है उस से मालूम होगा कि देवी ने इन्हें गण कहा है॥

शिवरात्रि के दिन भैरव, भैरवी और वटुकादि-गणों की पूजा होती है। यहां के लोग अपने अपने सम्प्रदाय के अनुसार इन की पूजा करते हैं। यह सम्प्रदाय तीन हैं। १—वाममार्ग वा वामाचार, २—दक्षिणाचार तथा ३—महाचार। इन का वर्णन इसी पुस्तक में दिया गया है। इन तीन सम्प्रदायों में वामाचार और महाचार पूर्वभागी हैं। दक्षिणाचार उत्तरभागी है। वामाचार और महाचार वाले (क्रमशः संध्या प्रदोष तथा अर्धरात्र वेला को) पूजा के लिए प्रधान मानते हैं। दक्षिणाचार वाले सूर्यकिरणपवित्रीभूत त्रयोदशी तिथि के प्रदोष को प्रधान मानते हैं। यह लोग सूर्यकिरणस्पर्शयुक्त तिथि को अधिक महत्त्व देते हैं। इस लिए प्रदोष अर्धरात्र तथा सन्ध्या का इस व्रत में अधिक ध्यान रखा जाता है, जैसा कि आगे वर्णन किया गया है। परन्तु इस प्रदोष या सन्ध्याकाल के विषय में धर्मशास्त्रियों का मत भेद है अर्थात् प्रदोष और सन्ध्या का समय धर्मशास्त्रों में भिन्न भिन्न दिखाया गया है जो कि इस निर्णय में आगे प्रकट होगा। इस कारण शिवरात्रि

मनाने में आज तक कभी कभी मतभेद हुआ है। तथा कई धर्मशास्त्र के वचनों का अर्थ भी संदिग्ध रहा है— अर्थ खोला नहीं गया है।

इस अवस्था में यही उचित होता है कि हमारे पूर्वजों के मत को अथवा देशाचार को दृष्टि गोचर रख कर शिवरात्रि व्रत का निर्णय किया जाए। इस बात का यहां पर उल्लेख करना भी आवश्यक प्रतीत होता है कि कई बार मतभेद होने पर यहां के धर्मशास्त्री किसी एक मत पर स्थिर नहीं हुए हैं। जनता का मन भी संदिग्ध ही बना रहा, यद्यपि उस ने अपने कुलगुरु वा किसी विश्वसनीय विद्वान् के कहने से द्वादशी अथवा त्रयोदशी को शिवरात्रि मनाई। इस प्रकार के संदेह को मिटाने के लिए ब्राह्मणमहामण्डल कश्मीर ने, शिवरात्रि मनाने वाली उस जनता के लिये, जो धर्म शास्त्र तथा, संस्कृत से अन भिज्ञ है, अपनी उपसभा विद्वत्परिषद् के द्वारा शिवरात्रि व्रत-विषक धर्म-शास्त्र-वाक्य संग्रह कराके, हिन्दी भाषा में यह निर्णय प्रकाशित किया है। जिस से हिन्दी भाषा जानने वाली जनता स्वयं शिवरात्रि के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सके।

इस विद्वत्परिषद् में जिस का मैं भी एक सदस्य हूँ नीचे लिखे विद्वान् सम्मिलित हैं।

१) श्री नाथ राम शास्त्री, २) श्री प्रो० श्री जगद्धर जाडू
३) श्री पीताम्बर शास्त्री, ४) श्री शम्भु नाथ राजानक,
५) श्री मुकुन्द राम राजानक ६) श्री श्याम सुन्दर जतू,
७) श्री राम भट्ट हुण्डू, ८) श्री भास्कर नाथ चन्द्र शास्त्री,

६) डा० श्री शिवनाथ शास्त्री (मंत्री विद्वत्परिषद्)

अन्त में मैं और ब्राह्मणमहामण्डल कश्मीर उक्त विद्वत्परिषद् और कई महानुभावों का आभारी है। जिन्होंने मण्डल की संरक्षकता में अपना अमूल्य समय देकर इस निर्णय को संपन्न कराने में हमारी सहायता की हैं, और ज्योतिषी श्री पीताम्बर साबन्यू, का विशेष आभार मानते हैं। जिस ने धर्म चिन्तामणि, हरिहर-वासर-विनोद आदि इस निर्णय के लिये उपयोगी पुस्तकें देने से हमें कृतार्थ किया ॥

निवेदक

श्री गोविन्द भट्ट शास्त्री,

प्रधान

ब्राह्मणमहामण्डल कश्मीर

शिवरात्रि (हरात्रि) निर्णय

—:❀:—

इस शुभ त्योहार को हम शिवरात्रि या कश्मीरी भाषा में 'हेरत' के नाम से पुकारते है। परन्तु शास्त्रों में इस का नाम भैरवोत्सव तथा अनेकस्थानों पर हरात्रि भी पाया जाता है। कश्मीरी 'हेरत' शब्द को हर-रात्रि शब्द को अपभ्रंश होने की अधिक सम्भावना है। शिवरात्रि शब्द का अपभ्रंश होने की भी सम्भावना है, क्योंकि कश्मीरी भाषा में संस्कृत शब्द के 'श' का 'ह' में परिवर्तन हुआ है, जैसे—संस्कृत 'शाक' कश्मीरी भाषा में 'हाक' हुआ है और संस्कृत 'शत' कश्मीरी में 'हत' हुआ है। अस्तु, जो हो, नाम मात्र पर विवाद व्यर्थ है।

शिवरात्रि वा हरात्रि का निरूपण करने वाले शास्त्र

शिवरात्रि वा हरात्रि कश्मीर में मनाई जाती है

और यह तांत्रिक व्रत वा उत्सव है, अतः कश्मीर के जिन तांत्रिक शास्त्रों में इस की चर्चा वा निरूपण मिलता है उन के नाम यह हैं :— (१) धर्म चिन्तामणि, (२) हरिहर वासर विनोद, (इन दो शास्त्रों ने इस व्रत पर अधिक प्रकाश डाला है), (३) माहेश्वर कल्प, (४) शिव संहिता, (५) सूर्यार्णव, (६) योगिनी तंत्र, (७) हर चरित्र चिन्तामणि, (८) सिद्धान्त-तंत्र, (९) वामकेश्वर तंत्र, (१०) और रुद्रयामल तंत्र ।

तंत्र शास्त्रों का मूल वेद है, अतः वेद में एक मंत्र "रात्रिं प्रपद्ये जननीं०" शिवरात्रि का निरूपण करने वाला पाया जाता है। यह मंत्र अर्थ सहित इस निर्णय के अन्त में लिखा जाएगा ।

शिवरात्रि और शिवचतुर्दशी व्रत में अन्तर

जिस शिवरात्रि नामक व्रत को कश्मीर से बाहर के सनातन धर्मी रखते हैं वह कश्मीर के शिवरात्रि व्रत से भिन्न है, क्योंकि कश्मीरियों का शिवरात्रि व्रत फाल्गुण कृष्णपक्ष त्रयोदशी का व्रत है । यह फाल्गुण कृष्णपक्ष द्वादशी वा त्रयोदशी को शास्त्रीय नियमों के आधार पर यहां मनाते हैं जिस का वर्णन आगे होगा । बाहर का शिवरात्रि-व्रत फाल्गुण कृष्णपक्ष चतुर्दशी का व्रत है वह त्रयोदशी वा चतुर्दशी के दिन शास्त्र के नियमानुसार मनाया जाता है। बाहर के इस शिवरात्रि नामक चतुर्दशी व्रत को कश्मीर में शिवरात्रि व्रत नहीं कहते हैं, किं-पुनः शिवचतुर्दशी व्रत कहते हैं । यहां की हिन्दू जनता

का अधिकाँश इस शिवचतुर्दशीव्रत को माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन रखता है। बिरला ही कोई शिवचतुर्दशी व्रत फाल्गुण-कृष्ण-चतुर्दशी को यहाँ रखता है।

इस के अतिरिक्त शिवचतुर्दशी व्रत में ताम्बूल खाना तथा फलाहार तक भी निषिद्ध है जैसा कि :— पद्म पुराण में लिखा है "शिवयागे चतुर्दश्यां न व्रते फल भोजनम्" अर्थात् शिवचतुर्दशी व्रत में फलाहार नहीं करना चाहिए। महेश्वर संहिता में कहा गया है। कि "ताम्बूलमपि ना दद्याद् व्रत भंग भयात्प्रिये" अर्थात् शिवचतुर्दशी व्रत में ताम्बूल खाने से भी व्रत भंग होता है। इस व्रत में उपवास करना होता है। इस के विरुद्ध शिवरात्रि [हररात्रि] व्रत में भोजन करना और बलि शेष नैवेद्य खाना अनिवार्य कहा है।

माहेश्वर कल्प में लिखा है :—

हररात्रि त्रयोदश्यां, पूजयञ्जगदीश्वरौ, ।
क्षेत्रेशानपि देवेशि, भूतान्प्रेतगणांस्तथा ॥

भक्ष्यैर्नानाविधैर्मूलैः फलैश्चापि विशेषतः ।
एवं महोत्सवं कृत्वा, हररात्रौ महेश्वरि ॥

पुत्रमित्रजनैः सार्धं पश्चाद्भुँजीत सस्पृहः ।
अनश्नंस्तद्दिने देवि, विघ्नान प्राप्नोति दारुणान् ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन, हररात्रौ महेश्वरि ।
महाप्रसादं गृह्णीयादिति तंत्रानुशासनम् ॥

अर्थात्— शिवरात्रि [हरत्रात्रि] के दिन शिव, शक्ति, क्षेत्रेश एवं भूतादि बलि देकर व्रती सकुटुम्ब प्रसाद शेष खावे अन्यथा उसे विघ्न आते हैं। शिवसंहिता में भी कहा है कि :—

"यो यागोत्सवमुल्लंघ्य, तिष्ठेन्निरशनो व्रती।
जीवन्स पशुतामेति, मृतो निरयमाप्नुयात्" ॥

अर्थात् — जो व्रत धारी याग समाप्त करके स्वयं नैवेद्य न खावे वह पशु के समान है और मर कर नरक में जाता है। इस दिन बलि का शेष न खाने पर हरिहर-वासरविनोद में भी "स भवेद्योगिनी भक्ष्यः पशुर्जन्मनि जन्मनि" इस प्रकार की दुर्गति लिखी है।

इस व्रत में मांस बलि देने का विधान [प्रवृत्ति मार्गियों के लिए] सूर्यार्णव में लिखा है।

"मत्स्यैर्मांसै र्मोदकैश्च, वटकै र्वर्बरैस्तथा।
कामायां पूजयेद्रात्रौ, भैरवं परमादृतः।
क्षेत्रेशान् पूजयेत्तत्र सर्वा-कामानवाप्नुयात्" ॥

अर्थात् — मत्स्य मांसादि बलि से त्रयोदशी रात्रि में आदर पूर्वक भैरव और क्षेत्रेशों की पूजा से सब कामनाओं की सिद्धि होती है। हरिहर-वासर-विनोद में भी मांस बलि का विधान है। जैसे —

"मीनभक्ष्यान् गणान्पूज्य, प्रसादं गृह्णते न ये।
ते वै विघ्नसमुद्भूता निरयं यान्ति दारुणम्" ॥

अर्थात् — मीन भोजी गणों की पूजा करके जो नवेद्य शेष नहीं खाते है वह विघ्न पाते है और नरक में जाते हैं।

इन प्रमाणों से हरराात्रि व्रत में उपवास का निषेध और नैवेद्य शेष खाने का आदेश है। इस के विरुद्ध शिवचतुर्दशी व्रत में उपवास करने के प्रमाण ऊपर दिये गये हैं। अतः शिवरात्रि शिवचतुर्दशी से भिन्न व्रत है।

शिवरात्रि कब से और क्यों मनाई जाती है?

स्वर्गवासी 'वंगू' जात्यंकित पं० शिवभट्ट ने विक्रम संवत १६८७ में 'शिवरात्रि निरूपण' नाम की एक पुस्तिका लिख कर छपाई है, जिस से मालूम होता है कि मनुष्य सृष्टि के आरंभ में महादेव ने अपनी परमाशक्ति का ध्यान किया तो देखा कि वह हिमाचल के एक भाग सुन्दर-नाल नामक प्रसिद्ध वन में अपने से उत्पन्न की हुई अनेक देवियों [योगिनियों] के साथ मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी, नाना प्रकार के पदार्थों को, तथा नाना पक्वान्न और मांसादि को तैयार करने में लगी है। महादेव ने, पंचमुख, अष्टादशभुजयुक्त और १५ नेत्रों वाला वीरनायक स्वच्छन्द भैरव रूप धारण किया था। इस रूप को देख कर योगिनियां सहम गई और भाग जाने का यत्न करने लगी। तो परमाशक्ति महामाया ने क्रोध से एक जलकुँभ में दृष्टि डाली उस में से वटुक भैरव आयुधों सहित निकल आया। वटुक को महादेव के निवारण में असमर्थ जानकर महामाया

भगवती ने और एक जलकुँभ में दृष्टि डाली, तो उस से एक और गण सब आयुधों सहित सुन्दर आकार वाला [राम नामक] उत्पन्न हुआ। इसी प्रकार भगवती ने असंख्य गणों को उत्पन्न करके भयानक रूपवाले महादेव को निवारण करने के लिए उन्हें आज्ञा दी। इन में से वटुक रजोगुण-मूर्ति और गर्वित था, राम या रमण सत्वगुणमूर्ति था।

यह सब गण स्वच्छन्दनाथ शिव पर आक्रमण करने के लिए उद्यत हुए, परन्तु शिव अन्तर्ध्यान हुए, तो परमाशक्ति के पास सब गण आ गये। देवी ने वटुक और राम को वरदान दिया कि:—

यस्मान्मदृष्टिसंभूतो, वटुरूपः प्रतापवान।
तस्मात्त्वं वटुको नाम पुत्र लोके भविष्यसि॥

कामप्रदाता सर्वेषां, पालको वै भविष्यसि।
कामायां पूजनान्नित्यं, गणैः सार्धं च पुत्रकः॥

पूजयेद्यो महेशानं, देवीपुत्रं च बालकम्।
फाल्गुणासितकामायाँ, सर्वसिद्धिमवाप्नुयात्॥

वटोर्दत्वा वरं देवी, पुनारमणमब्रवीत्।
शुभदृष्ट्या परं पुत्र, प्रादुर्भूतोसि मे यतः॥

रमणो दिव्यरूपश्च, राम इत्याख्यया भव।
वटुकानन्तरं पूजां, प्राप्स्यसे सुरसुन्दर॥

रज्यन्ते महसि दिव्ये, यत्र ते योगिनां गणाः।
तस्माद्रामेति नाम्ना वै, पुत्र लोके भविष्यसि॥

तस्मात्त्वं वटुकश्चापि, मदाज्ञाधारिणावुभौ ॥
सर्वसिद्धिप्रदौ लोके, मद्गणानामधीश्वरौ ......इत्यादि ॥

अर्थात् — जिस कारण तुम मेरी दृष्टि से वटु [ब्रह्मचारी] रूप में पैदा हुए हो इस लिए तेरा नाम वटुक होगा। त्रयोदशी के दिन सब गणों के साथ तेरी पूजा जो करे उस के अभिलाषों को तू सिद्ध करेगा, और उसका पालक तू होगा। जो तेरी पूजा फाल्गुण कृष्णपक्ष त्रयोदशी को करे वह सब सिद्धियों को प्राप्त करेगा। यह कह कर भगवती राम से बोली "हे पुत्र! तू मेरी शुभ दृष्टि से उत्पन्न हुए हो, तेरा रूप दिव्य है, तुझे देख कर मन प्रसन्न होता है। तेरा नाम "राम" होगा, क्योंकि तेरे दिव्य तेज में योगी रमण करते हैं, तू वटुक के अनन्तर पूजा प्राप्त करेगा। वटुक और तुम मेरे सब गणों के अधिपति हो, तुम मेरी आज्ञा धारण करने वाले हो, तुम्हारी पूजा से सब आपदाएं दूर होंगी, और सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होगी ॥

इस प्रकार का वरदान देकर योगिनियों से भगवती ने कहा कि यह जो सब पक्वान्न आदि तथा मांसादि तुमने बनाये हैं वह इन गणों को अर्पण करो। भगवती की आज्ञा से उन्होंने वैसा ही किया। इसी दिन प्रदोष काल में भगवान् महादेव वटुक आदि का घमंड दूर करने के लिए एक भयानक ज्वालालिंग में प्रकट हुए, उसे देख भयभीत हो कर सब गण वटुक और रमण के शरण में आये। वटुक और रमण ने गणों को आश्वासन दिया और इस

ज्योतिर्लिङ्ग का आदि तथा अन्त देखने के लिए वटुक ऊपर को गया, तथा रमण नीचे की ओर गया। परन्तु किसी ने भी आदि या अन्त न पाया। योगिनियां परमाशक्ति में लीन हो गई तथा परमाशक्ति इस ज्वालालिंग में लीन हुई। वटुक और रमण या राम श्रान्त होकर उस ज्वालालिंग के पास जड की भांति आ पडे, और उस की स्तुति करने लगे। इस दिन फाल्गुण–कृष्णपक्ष–त्रयोदशी थी। इसी दिन संध्याकाल में भगवान् शिव ज्वाला रूप में प्रकट हुए और अर्धरात्रि के अनन्तर शान्त होने लगे। प्रदोष काल में ज्वालालिंग के प्रकट होने से कई लोगोंने प्रदोष काल को पूजा काल माना है, कई लोगोंने प्रदोष काल में महादेव की ज्वालामूर्ति भयानक होने से उस काल को पूजाकाल नहीं माना। किं पुनः अर्धरात्रि को माना है, क्योंकि उस समय महादेव का ज्वालारूप शान्त होने लगा था, इसीलिए दक्षिणाचारी और वामाचारी प्रदोष-कालव्यापिनी त्रयोदशी को मानते है। महाचारी अर्धरात्र व्यापिनी को। इसी कारण से कभी कभी दो शिवरात्रियाँ मनाई जाती है। संप्रदाय प्रदीपिका में भी इस का संक्षिप्त वर्णन है।

शिवरात्रि सब व्रतों और त्योहारों में श्रेष्ठ है

कश्मीर में इतने समारोह से और इतने दिनों तक और कोई भी त्योहार मनाया नहीं जाता है। फाल्गुण कृष्ण प्रतिपदा से लेकर यह त्योहार अमावसी तक विशेषतया मनाया जाता है, जैसा कि :—

"हरि-हरवासरविनोद" में लिखा है ।

फाल्गुणस्यासिते पक्षे, हररात्रौ महोत्सवम् ।
ये कुर्वन्ति त्रयोदश्यां, न ते वै दुःखभाजनाः ॥१॥

महामाघीमतीत्यैव, सम्भारान् कल्पयेद्बुधः ।
द्वितीयस्यां मत्स्यभाण्डान्, पूरयेन्निम्बुनागरैः ॥२॥

सर्षपोत्थैर्महातैलै भर्जयेत्साधकोत्तमः ।
तृतीयस्यां महामाषान् मुद्गांश्च काचसन्निभान् ॥३॥

शुचौ देशे तथाभ्युदय, शुचिना वारिणापि च ।
चतुर्थ्यां पेषयेच्चापि, निशामरिचसंयुतान् ॥४॥

सुमुहूर्ते सुनक्षत्रे, पंचम्यामथवा नरः ।
कटाहारोहणं कुर्यान्नमस्कृत्य च भैरवम् ॥५॥

षष्ठ्यां वा सप्तम्यां वापि, वटकान् वर्वरांस्तथा ।
मत्स्यांश्च घृतपूरांश्च, शतच्छिद्रांश्च लोपिकाः ॥६॥

कुर्यान्महोत्सवार्थे तु भैरवस्य विधानतः ।
अष्टम्यां च नवम्यां च गृहं संमार्जयेच्छुभैः ॥७॥

गोमयैर्गौरमृद्भिश्च; सुधालेपैरपि द्रवैः ।
सुगन्धैरपि रंगैश्च, लेपयेद् विधिना ततः ॥८॥

षष्ठयां वा सप्तम्यां वापि, क्षेत्रेशान् वटुकं तथा ।
स्नानभाण्डस्तु देवस्य; वास्तुस्वामिन एव च ॥९॥

नवम्यां वा दशम्यां वा गृहं संशुद्धय चानयेत् ।
एकादश्यां मत्स्यभक्ष्याः पूजनीया गणा भुवि ॥१०॥

मीनभक्ष्यान् गणान पूज्य, प्रसादं गृह्णते न ये ।
ते वै विघ्नसमुद्भूता, निरयं यान्ति दारुणम् ॥११॥

द्वादश्यां चैव संकल्पं कुर्यात्क्षेत्रेशपूजने ।
अद्य फाल्गुण द्वादश्यां, क्षेत्रेशान् पूजयाम्यहम् ॥१२॥

महा भैरव यागार्थं, निर्विघ्नं कुरु भैरव ।
त्रयोदश्यां निराहारो, रात्रौ भैरव पूजनम् ॥१३॥

करोमि विधिना देव, निर्विघ्नं कुरु भैरव ।
मंत्रेणानेन संकल्प्य, भैरवं चार्चयेत्सुधीः ॥१४॥

त्रयोदश्यां तथा रात्रौ, गृह्णीयात प्रापणं ततः ।
भैरवौ पूजयित्वा तु, क्षेत्रेश बलिमुत्तमम् ॥१५॥

पूजयित्वा ततो मित्र-पुत्रभृत्यजनैः सह ।
महाप्रसादशेषं तु, भोक्तव्यं तत्र सन्निधौ ॥१६॥

यागे वै शिवरात्र्याख्ये, यः कश्चिन्मूढधीः नरः ।
देवताभ्यो बलिं दत्त्वा, तिष्ठेन्निरशनः स्वयम् ॥१७॥

स एव योगिनी भक्ष्यः सपुत्रपशुबान्धवः ।
भविष्यति न सन्देहो, नरकान्याति दारुणान् ॥१८॥

यह श्लोक रल्लकाचार्य ने विनोद में लिखे हैं। इस से यह मालूम होता है कि किस प्रकार हमारे पूर्वज

फाल्गुणवदि प्रतिपदा से ही इस महोत्सव को मनाने की तैयारी करते थे। और प्राचीन परिपाटी क्या थी? यह भी ज्ञात होता है। इन उपर्युक्त श्लोकों का संक्षिप्त अर्थ यह है कि फाल्गुण-कृष्णपक्ष-त्रयोदशी को जो लोग हर रात्रि महोत्सव करते है, वे किसी प्रकार का दुःख नही पाते है। माघ पूर्णिमा के बीतने पर, फाल्गुण कृष्णपक्ष प्रतिपदा से ही सामग्री का संग्रह करना चाहिए। द्वितीया और तृतीया को बर्तन आदि शुद्ध कर के मूँग, माष आदि के पापड आदि तेल से बनाने चाहिए। मूँग माषादि को जल से धो कर फिर सुखा कर पीसना चाहिए। हल्दी काले मिर्च आदि मसाले चतुर्थी के दिन पीस कर पंचमी के दिन कडाई को शुद्ध करे। षष्ठी और सप्तमी को भैरव के उत्सव के लिए घी में बडियां, लोचियां, मछलियां बनावे, इन्हीं (सप्तमी-अष्ठमी) के दिनों में गौर वर्ण मिट्टी से तथा रंग और सुगन्ध द्रव्यों से घर का लेपन करे, और क्षेत्रेश को बलि देवे। नवमी वा दशमी को भैरव पूजा के बर्तन (वटुक) लाये जावें। एकादशी के दिन मीन मांस खाने वाले गणों की पूजा कर के नैवेद्य शेष खावे अन्यथा विघ्न आ पडते हैं, और नरक में जाता है। द्वादशी के दिन क्षेत्रेश पूजा कर के वटुक भैरव की पूजा का संकल्प करे कि मैं कल त्रयोदशी के दिन वटुक भैरव की पूजा करूं। त्रयोदशी को सपरिवार वटुक भैरव की पूजा करे और बनाए हुए पक्वान्नों की और मांसादि की बलि देवे, और स्वयं बलिदान देने तक निराहार रहे। इस प्रकार शिव और शक्ति तथा क्षेत्रेशों की पूजा करके तथा बलि देकर पूजक स्वयं भी पुत्र-मित्र-परिवार सहित बलि शेष खावे, अन्यथा

वह परिवार सहित योगिनियों का भक्ष्य और नरक भोगी होता है। इस प्रकार रल्लकाचार्य ने केवल त्रयोदशी पूजा की चर्चा की है।

परन्तु "हरचरित्र चिन्ता मणि" में त्रयोदशी के अतिरिक्त भी तीन दिन की पूजा कही है जैसे :—

मनोहरे कृते यागे सन्ध्यायां शम्भुमर्चयेत्, ।
यथा विभव विस्तारैः भक्ति युक्तेन चेतसा ॥

एवं दिन त्रयं कार्य, त्रयोदश्यामिवोत्सवः ।
एवं त्रयोदशीमेव, विदध्याद्वा समाहितः ॥

अर्थात् — इस मनोहर याग पर संध्याकाल में शिव की पूजा भक्ति से करनी चाहिए, इसी प्रकार त्रयोदशी की भाँति तीन दिन तक उत्सव मनाना चाहिए। यदि कारण वश तीन दिन पूजा करने का सामर्थ्य न हो तो केवल त्रयोदशी को ही सावधानता से पूजा करनी चाहिए ॥

शिवरात्रि के अधिकारी

शिवरात्रि के अधिकारी तीन हैं। (१) वामाचारी। (२) दक्षिणाचारी। (३) महाचारी।

(१) वामाचारी :—

ये तु तंत्रोक्तविधिना शिवं देवीमथापि वा।
मकार पंचकै र्देवि. पूजयेयुर्हि नित्यदा।
ते प्रोक्तास्तंत्र शास्त्रज्ञै र्वामाचाराः शिवप्रियाः ॥

अर्थात् :— जो लोग तंत्र शास्त्रोक्त विधि से शिव शक्ति की पूजा पांच मकारों से करते हैं वह वामा चारी कहलाते हैं। यह लोग पूर्वभागी कहलाते है, और प्रदोष-व्यापिनी त्रयोदशी को पूजते है। यदि द्वा प्र० त्र प्र० हो अर्थात् त्रयोदशी तिथि, द्वादशी के प्रदोष को और दूसरे दिन भी प्रदोष को व्याप्त करती हो, तो यह पूर्व भागी होने से द्वादशी के प्रदोष में होने वाले त्रयोदशी प्रदोष को ही पूजते है, दूसरे दिन (त्रयोदशी दिन) के प्रदोष को नही पूजते हैं।

(२) दक्षिणाचारी :—

> ये सदाचारनिष्ठास्तु, वेदतंत्रोदिते रताः।
> ते प्रोक्ता दक्षिणाचारा, मंत्र तंत्र विशारदैः॥
> विष्णु शिवं च ब्रह्माणं, देवीं च पूजयन्ति ये।
> वैदिकैः स्मार्तकैश्चैव, ताँत्रिकैर्वाथ कर्मभिः॥

अर्थात्—जो सदाचार युक्त हो कर पँच मकारों का सेवन न करने वाले, वेद और तंत्र शास्त्रों पर चलने वाले, वैदिक, स्मार्त और तांत्रिक विधान से पंचायतन पूजा करते हैं, वे दक्षिणाचारी कहलाते हैं। दक्षिणाचारी उत्तर भागी हैं अर्थात् द्वा प्र० त्र० प्र० होने पर अथवा द्वा० दि० त्र० प्र० होने पर द्वादशी के प्रदोष में व्याप्त त्रयोदशी को न मान कर दूसरे दिन (त्रयोदशी के दिन) प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी को पूजते हैं, क्योंकि यह लोग दोनों (प्रातः और सायं सन्ध्याओं) में सूर्य समाश्लेष (विशेष स्पर्श) से पवित्र बने हुए त्रयोदशी के प्रदोष को अत्युत्तम मानते

हैं — जैसे त्र० प्र० होने से त्रयोदशी का सूय प्रातः और सायं सन्ध्या के साथ विशेष स्पर्श करता है।

(क) यदि द्वादि –त्रदि –हो, त्रयोदशी सायं संध्या से विशेष स्पर्श न करती हो, तो दक्षिणाचारी भी द्वादशी के प्रदोष में होने वाले सूर्य स्पर्शमात्र से युक्त त्रयोदशी के प्रदोष को पूजते हैं। क्योंकि द्वादि० होने से शेष दिन में त्रयोदशी सूर्य किरणों से स्पृष्ट होती है।

(ख) यदि त्र दि० हो परन्तु सायं सन्ध्या के साथ सूर्य का विशेष स्पर्श हो तो यह लोग त्रयोदशी को ही पूजते हैं जैसे दिनम् २८–१५ त्रदि २७–५०, हो ।

दक्षिणाचारी उत्तर भागी और तिथि प्राधान्यवादी कहलाते हैं, क्योंकि यह सूर्य किरणों से पवित्र बनी हुई त्रयोदशी तिथि को मनाते हैं। जैसा कि "धर्म–चिन्तामणि" तथा "विनोद" में कहा है।

"संध्याद्वये समाश्लिष्टा भास्वता या त्रयोदशी।
निशालिंगितभूतेशा सापि मिश्रा मता बुधैः ॥

अर्थात्—जिस शिवरात्रि–त्रयोदशी को सूर्य प्रातः संध्या को स्पर्श करके सायं संध्या को भी विशेष स्पर्श करता हो और रात्रि में चतुर्दशी व्याप्त हो वह भी मिश्रा कहलाती है। ऐसे तिथि विशेष में वामाचारी और महाचारी

द्वादशी के प्रदोष और अर्धरात्र को पूजते हैं, क्योंकि दोनों कालो में त्रयोदशी व्याप्त होती है। जहां जहां आगे सूर्य के संध्या-द्वय-समाश्लेष का वर्णन हो वहां यही श्लोक प्रमाण भूत है।

अब वामाचारी और दक्षिणाचारियों से पूज्य, प्रदोष की महिमा को शास्त्र के वचन प्रकट करते हैं:—

जैसे :—

"मुहूर्तमपि सन्ध्यायां जयातिथिर्यदा भवेत्,
तदा माद्यन्ति वै देवि, योगिन्यश्चापि सर्वशः।
अद्य यागो भवेन्नूनं भैरवस्य न संशयः॥

(योगिनी तंत्र)

अर्थात्—जब त्रयोदशी संध्याकाल में मुहूर्त मात्र भी रहती हो, तो योगिनियां प्रसन्न होती हैं कि आज भैरव का याग होगा (जिस में हमें भी बलि मिलेगी)। और इसी तंत्र में लिखा है कि :—

प्रथमं याममात्रं तु, या तिथिः स्यान्महेश्वरि।
प्रदोष व्यापिनी ज्ञेया, सा तिथिर्भैरवोत्सवे॥

यः स्यात्प्रथमयामस्य लवोपि सुरसुन्दरि।
सोपि प्रोक्तः पुराविद्भिः प्रदोष इति नामतः॥

अर्थात्— रात्रि के प्रथम पहर में जो तिथि व्याप्त हो वह प्रदोष व्यापिनी जाननी चाहिए। जो रात्रि के प्रथम

पहर का लव भी हो वह भी प्रदोष माना गया है।

अब सूर्योदय वा सूर्य किरणों से पवित्रीभूत दक्षिणाचारियों से मान्य त्रयोदशी की महिमा गाई जाती है। "वामकेश्वर-तंत्र" में कहा है :—

यस्यामुदेति वै सूर्यः, सा तिथिर्भैरवोत्सवे ।
दक्षिणाचारनिष्ठानां मुनिभिः कथिता सदा ॥

अर्थात् — दक्षिणाचारियों को भैरवोत्सव मनाने के लिए वही तिथि मुनियों ने कही है, जिस में सूर्योदय होता हो ।

रुद्रयामल में कहा है :—

उद्यद्दिवाकरयुतां हररात्रित्रयोदशीम्,
दक्षिणाचार-वान्देवि प्रकुर्यात्सर्वदा गृही ।
अकुर्वन्याति च नरो नरकानेकविंशतिम् ॥

अर्थात् — हररात्रि-त्रयोदशी, जिस में सूर्य उदय करता हो दक्षिणाचारी गृहस्थ को पूजनीय है। इस के विरुद्ध करने वाला मनुष्य (दक्षिणाचारी) नरकों में जाता है ।

यहां इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सूर्योदय-युक्त त्रयोदशी तभी दक्षिणाचारियों को पूजनीय होती है जब द्वा प्र० हो अथवा द्वादि० त्र प्र० हो । यदि द्वादि०

त्र दि० हो परन्तु त्रयोदशी सूर्योदय से पवित्रित हो कर सायं संध्या को विशेष स्पर्श करती हो, तब भी उन्हें त्रयोदशी ही पूज्य है ।

(३) महाचारी :—

इन का वर्णन "हरिहरवासर विनोद" में इस प्रकार है —

भैरवं स्वाप्रभेदेन ज्ञात्वा पूजां प्रकुर्वते,
भैरवाणां च देवीनाँ मकार पंचकैः प्रिये।
महाचारास्तु ते प्रोक्ताः पूजकाः शिवशासने॥

अर्थात् — जो उपास्य देव (भैरव) को अपने से अभिन्न जान कर अन्य वटुकादि भैरवों और देवियों की पूजा मकार पंचक से करते हैं वह शिव शास्त्र में महाचारी कहलाते हैं। यह लोग अर्धरात्रि में होने वाली त्रयोदशी को पूजनीय मानते हैं, क्योंकि यह अर्धरात्रि वेला को ही (ज्वालालिंग महादेव के शान्त होने से) प्रधान मानते हैं। यह भी पूर्वभागी हैं । यदि द्वादशी के अर्धरात्र, और त्रयोदशी के अर्धरात्र में (दोनों अर्धरात्रों में) त्रयोदशी हो, तो यह द्वादशी के अर्धरात्र को ही प्रधान मान कर उसी दिन पूजा करते हैं। जैसे रात्र्यर्ध १५–५६ द्वा प्र १५–४८ त्रशे १६/५ हो, तो यह द्वादशी के अर्धरात्र को पूज्य मानते हैं । यदि द्वादशी के अर्धरात्र से पहले त्रयोदशी

स्पर्श न करती हो, तो त्रयोदशो के अर्धरात्र को पूजते हैं ।

जैसा कहा है :—

निशीथं न स्पृशेत्साचेद्द्वादश्यां तु त्रयोदशी ।
तदा परदिनं पूज्यं प्रदोषे वार्धरात्र के ॥

अर्थात्— जब द्वादशी के अर्धरात्र से पूर्व त्रयोदशी स्पर्श न करती हो तो दूसरे दिन पूजा करनी चाहिए । यदि द्वादशी और त्रयोदशी के अर्धरात्र को त्रयोदशी स्पर्श न करती हो तो सबों को त्रयोदशी का प्रदोष ही पूजनीय होता है । जैसे रात्र्यर्ध १५-२५ त्रशे १४ प्र० १४ हो । तो त्रयोदशी के प्रदोष को सब पूजते हैं जैसा कि कहा गया है ।

यद्यर्धरात्रिसंस्पर्शो, ष्युभयत्र च नो भवेत् ।
प्रदोषव्यापिनी तर्हि, पूज्या सर्वैस्त्रयोदशी ॥

(धर्मचिन्तामणि)

अर्थात्— द्वादशी और त्रयोदशी की अर्धरात्र वेला में त्रयोदशी न हो तो सब को वामाचारी, महाचारी और दक्षिणाचारियों को त्रयोदशी के प्रदोष काल में पूजा करनी चाहिए ।

महाचारियों से पूज्य अर्धरात्र की प्रशंसा करने वाले वचन नीचे लिखे जाते हैं :—

द्वादश्यामर्धरात्रेपि, यदि लभा त्रयोदशी ।

निशा हरस्य सञ्ज्ञेया, क्रतुलक्षफलैः समा ॥

(सिद्धान्त तंत्र)

अर्थात्— यदि द्वादशी के अर्धरात्र से पूर्व त्रयोदशी का प्रवेश हो तो उस हररात्रि का फल लाख यज्ञों के फल के समान है। इसी प्रकार माहेश्वर तंत्र में भी लिखा है :—

मुहूर्तार्धं निशीथस्य, यानुल्लंघ्य हि तिष्ठति ।
त्रयोदशी तु सा प्रोक्ता, नित्यं भैरवतोषिणी ॥

अर्थात्—जिस त्रयोदशी की एक घडी भी (द्वादशी के अर्धरात्र से पूर्व आरंभ हुई हो वह त्रयोदशी भैरव को संतुष्ट करने वाली है।

हररात्रि वा शिवरात्रि के भेद

हररात्रि— तीन प्रकार की है। (१) शुद्धा। (२) मिश्रा। (३) मिश्रा।

जैसे कहा है :—

यासौ फाल्गुणमासस्य कृष्णादेवि त्रयोदशी ।
हरस्यरात्रिका प्रोक्ता, भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।
साचापि त्रिविधा प्रोक्ता, शुद्धामिश्रादिभेदतः ॥

अर्थात्— फाल्गुण मास की कृष्णत्रयोदशी हररात्रि कहलाती है जो भोग और मोक्ष को देती है। वह शुद्धा,

मिश्रा, मिश्रा भेद से तीन प्रकार की हैं।

(१) शुद्धा —

रात्रिन्दिनं या देवेशि, जयातिथिरमीदृशाः
सा प्रोक्ता तंत्रपारज्ञैः शुद्धा सर्वार्थकामदा ॥

(धर्मचिन्तामणि)

अर्थात् — जो त्रयोदशी तिथि दिन तथा रात्रि में व्याप्त हो, वह सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली शुद्धा कहलाती है।

जैसे — त्रशो

(२) मिश्रा —

विष्णुनानुगताया च हरस्य रात्रिका परा।
सा प्रोक्ता देवदेवेशि मिश्रा चेति पुरातनैः ॥

(धर्मचिन्तामणि)

अर्थात् — जो हररात्रि त्रयोदशी, द्वादशी में प्रवेश करती हो उसे मिश्रा कहते हैं।

जैसे — द्वा दि० त्र प्र०

(३) मिश्रा —

संध्याद्वये समाश्लिष्टा, भास्वता या त्रयोदशी ।
निशालिंगितभूतेशा, सापि मिश्रा मता बुधैः ॥
(धर्मचि० विनोद)

इस का अर्थ ऊपर लिखा गया है ।

हरराात्रि पूजा का फल

तस्यां सम्पूज्य विधिव, भूतेशं भैरवं प्रिये ।
नाना पुष्पैः सुगन्धैश्च, मांसैर्मत्स्योपहारकैः ॥

अपूपैर्वटकैश्चैव, बर्बरैः, शतच्छिद्रकैः ।
लोपिका मोदकैश्चैव, मदिरा पानकैस्तथा ॥

आरात्रिकाभिर्देवेशि, कुसुमांजलिभिस्तथा ।
प्राप्नोति विविधान् कामा नरोभक्तिसमन्वितः ॥

वर्षे वर्षे तु योदेवि, प्रकुर्याद्भैरवोत्सवम् ।
इह भुक्त्वा शुभान् भोगान्, सोन्तेयाति परं पदम् ॥

अर्थात् — उस हरराात्रि में भूतनाथ भैरव की पूजा नाना प्रकार के पुष्पों से तथा सुगंधयुक्त पदार्थों से, मत्स्य माँसादि बलि से रोटियों से बड़ियों से लोचियों से मिठाइयों से, मदिरा तथा पानक आदि से आरात्रिका और पुष्पां-

जलियों से करनी चाहिए जिस से भक्त मनुष्य सब कामनाओं को प्राप्त करता है। जो कोई प्रतिवर्ष शैरवोत्सव को श्रद्धा से करता है वह इस लोक में उत्तम भोगों को भोग कर अन्त में परम पद (मोक्ष) को पाता है।

शिवरात्रि कब एक होती है और कब दो होती हैं? इस का परिचय नीचे दिया जाता है।

१ द्वाप्र० त्रप्र० (दो) पहले दिन प्रदोषाऽर्धरात्रव्यापिनी दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी सूर्य स्पर्श विशेष युक्ता भी,

२ द्वाद्वि० त्रप्र० (दो) पहले दिन प्रदोषाऽर्धरात्रव्यापिनी दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी सूर्य स्पर्श विशेष युक्ता भी,

३ द्वाप्र० त्रद्वि० (दो) पहले दिन प्रदोषाऽर्धरात्रव्यापिनी, दूसरे दिन सूर्य स्पर्श विशेष युक्त होने से ही

४ द्वाशे १३ प्र १४ त्रशे० ८

(दो) रार्ध १५ पहले दिन अर्धरात्रव्या० दूसरे दिन प्रदोष व्या०

५ द्वाशे ८ त्रशे० १३ प्र० रार्ध १५
(एक) त्रयोदशी के प्रदोष में सबों को पूज्य है, दोनों दिन अर्धरात्र व्यापिनी नही है

६ त्रशे १६ प्र० १२ रार्ध १५
(दो) पहले दिन अर्धरात्रव्यापिनी दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी,

७ द्वादि त्रदि (एक) त्रयोदशी यदि सायं-संध्या के साथ विशेष स्पर्श न करती हो।

८ द्वादि त्रदि २७-५८ (दो) दिनम् २८/१५
पहले दिन प्रदोषार्धरात्रव्यापिनी दूसरे दिन सूर्यविशेष, स्पर्श युक्ता

९ द्वाप्र० त्रशे (दो) पहले दिन अर्धरात्रव्यापिनी दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी सूर्य स्पर्श विशेष युक्ता,

१० द्वाशे० त्रशे (एक) त्रयोदशी को प्रदोषार्धरात्रव्यापिनी सूर्य विशेष स्पर्श युक्ता,

११ द्वादि० त्र्यहः चशे० (एक)
द्वादशी के दिन सूर्य स्पर्श मात्र युक्ता,

१२ त्रशो० त्रदि०　　(एक) पहली त्रयोदशी के दिन
प्रदोषाऽर्धरात्र व्यापिनी सूर्य विशेष
स्पर्श युक्ता

वेद में शिवरात्रि निरूपण

रात्रीं प्रपद्ये जननीं, सर्वभूत निवेशिनीम् ।
भद्रां भगवतीं कृष्णाँ, विश्वस्य जगतोऽनिशाम् ॥

संवेशिनीं संय्यमनीं ग्रहनक्षत्रमालिनीम् ।
प्रपन्नोहं शिवाँ रात्रीं भद्रे पारमशीमहि ॥

अर्थात् — मैं कृष्णपक्ष संबन्धिनी शिवरात्रि को उत्कृष्ट जानता हूं अतः उस की शरण में जाता हूँ जो सूर्य किरणों से युक्त हो कर (सूर्योदय से सूर्यास्त तक सूर्य स्पर्श विशेष युक्त अथवा सूर्य स्पर्श मात्र युक्त प्रदोष व्यापिनी दक्षिणाचारियों से पूज्य) है (जननीम्) जगत् व्यवहार को उत्पन्न करती है (दिन में जगत् व्यवहार भली भांति चलता है) और (सर्व-भूत निवेशिनीम्) सब भूतों को अपनी प्रभा से प्रभावित करने वाली है (भद्रां) कल्याण दायिनी (भगवतीं) धर्म, ज्ञान, ऐश्वर्य, तथा मुक्ति दायिनी है । इतने से रवि किरण स्पर्श युक्त तिथि का वर्णन कर के, प्रदोष व्यापिनी का वर्णन करता है कि "विश्वस्य जगतो" सारे जगत् के व्यवहार को "अनिशाम्" अत्यन्त क्षीण न करने वाली है । प्रदोष काल

में यद्यपि दिन का सा व्यवहार नहीं चलता है तथापि अत्यन्त लुप्त भी नही होता है। अब अर्धरात्र व्यापिनी का वर्णन करता है "संवेशिनीम्" गाढनिद्रा देने वाली "संय्यमनीम्" सब व्यवहार से उपरत कर के संयम में रखने वाली (आधीरात को सारा जगत् अपने व्यवहार से उपरत होता है । अब विशेष शिवरात्रि का वर्णन करता है "ग्रह नक्षत्र मालिनीम्" ग्रह चन्द्रवासर "नक्षत्र" श्रवण नक्षत्र से "मालिनीम्" शोभा देने वाली जो है । जब शिवरात्रि त्रयोदशी के दिन सोमवार और श्रवण नक्षत्र हों तो वह सर्वोत्तम शिवरात्रि होती है । इसी प्रकार जब शिवचतुर्दशी के दिन शनिवार और शतभिषक् नक्षत्र हो तो वह अत्युत्तम शिवचतुर्दशी होती है ॥

सन्ध्या

मुहूर्त चिन्तामणौ

सन्ध्या त्रिनाडी प्रमितार्क बिम्बा-दर्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र ॥इति॥

अर्थात् — सूर्य का अर्धोदय होने से पूर्व की तीन घड़ियाँ प्रातः सन्ध्या है और सूर्य का अर्धास्त होने के उपरान्त तीन घड़ियां सायं सन्ध्या है । कई आचार्यों ने सूर्य मण्डल खण्डित होने पर सन्ध्या मानी है । वराह ने प्रातः-काल की सन्ध्या तारकों के लुप्त होने से सूर्योदय तक मानी है । शाम की सन्ध्या सूर्य का अर्धास्त होने

के समय से तारक दर्शन तक मानी है।

जसे :—

"अर्धास्तमितानुदितात्सूर्यादस्पष्ट भं नभो यावत् तावत्सन्ध्या कालः" ॥ लौगाक्षिगृह्यसूत्र में कहा है, कि "सकलादित्योपलक्षितः कालो दिवसः। आदित्य शून्य कालो रात्रिः। अर्धोदितेनार्धास्तंगतेन चादित्येनोपलक्षितः कालः सन्धिः ॥ सन्धौ भवा सन्ध्या। स नक्षत्र कालादारभ्य आ सूर्य ज्योतिर्दर्शनात् पूर्वाह्णभागः सन्ध्या, स भास्कर कालादारभ्य आ तारक ज्योतिर्दर्शनात् अपराह्णभागः सन्ध्या ॥इति॥

अर्थात्— जिस में पूर्णबिम्ब सूर्य देख पड़े वह दिन है। जिस में सूर्य देख न पड़े वह रात्रि है जिस में आधा उदित सूर्य देख पड़े वह प्रातः सन्ध्या है, जिस में आधा अस्त हुआ सूर्य देख पड़े वह सायं सन्ध्याकाल है।

नारद का वचन है, अर्धास्त से तीन घडियां सायं सन्ध्या है। तथा अर्धोदय से पहले की तीन घडियां प्रातः सन्ध्या है ऊपर के इन वचनों से सूर्य मण्डल खंडित होने से पहले की तीन घडियां प्रातः सन्ध्या है। और खण्ड-मण्डल के पीछे की तीन घडियां सायं सन्ध्या है। स्कन्द पुराण में भी उदय से पहले की तीन घडियां तथा अस्त के पीछे की तीन घडियां प्रातः और सायं की सन्ध्या मानी है। इस में खण्ड मण्डल की चर्चा नहीं है। प्रायश्चित

तत्त्व में लिखा है कि "रात्रे राद्यन्त दण्डचतुष्ठयात्मकः कालः सन्ध्याख्यः, त्रियामां रजनीं प्राहु स्त्यक्त्वाद्यन्तचतुष्टयम् नाडीनाँ तदुभे सन्ध्ये दिवसाद्यन्त संज्ञिते ।।इति।।

अर्थात् — रात्रि चार प्रहर नहीं–तीन ही प्रहर हैं इसी लिये इसे त्रियामा कहते है क्योंकि पहले की चार घडियां और अन्तिम चार घडियां रात्रि से सम्बन्ध नही रखती है। वह पहले की चार घडियां सायं सन्ध्या कहलाती है। और अन्तिम चार घड़ियां प्रातः सन्ध्या कहलाती है।

इस से ज्ञात होता है कि सन्ध्या काल चार घडियों का भी कहा गया है। सन्ध्या भाष्य में इस प्रकार कहा गया है।

कि :—

चतुस्रो नाडिकाः सायं गौण कालस्तु मध्यमः ।
प्रातः कालेप्येवमेव सन्ध्या काल उदीरितः ॥

षट् घटिकात्मकः कालः प्रातः काल शब्दार्थः मुहूर्त त्रितयं प्रार्तरिति वचनात् ॥ यहां के आचार्यों ने दिन की अन्तिम सवा घडी और रात की आदिम सवा घडी "कुल ढाई घडियां सायं सन्ध्याकाल माना है–यथा दिनान्ते दण्ड एकश्च रात्रेरादिम एव च । मुहूर्तमेतत्कथितं सन्ध्याख्यं वेदपारगैः सन्ध्यांशश्चापि कथितस्त्रिंशत्पलक एव च ॥ (बुधाष्टमी निर्णये)

अर्थात् — दिन के अन्त की एक घडी और रात्रि के आदि की एक घडी यह मुहूर्त सायं सन्ध्या नाम वाला वेद वेत्ताओं ने कहा है । और सन्ध्याँश तीस पल का कहा गया है । इस लिए सन्ध्या २ घडी तीस पल है। ऐसा उक्त वचन से ज्ञात होता है । धर्म-प्रवृत्ति में दो घडियों का ही सायं सन्ध्याकाल माना है। बुधाष्टमी में ढाई घडियों का सायं संन्ध्याकाल माना है और सब विद्वत्परिषद् के विद्वानों की भी यही सम्मति है अतः ढाई घडियों का सायं सध्याकाल यहाँ माना गया है अर्थात् सूर्यास्त पूर्व एक घडी और सूर्यास्त के अनन्तर एक घडी। और तीस पल, सन्ध्यांश ॥

इन भिन्न भिन्न वचनों से ज्ञात होता है कि सन्ध्याकाल के विषय में मत-भेद है। यह मत-भेद देश-भेद से सूर्योदय और सूर्यास्त भेद से हो सकता है ।

प्रदोष निरूपणम् ॥

१) स्कन्द पुराण में—त्रिमुहूर्तः प्रदोषः स्याद्रवावस्तंगते सति सूर्यास्त होने पर ६ घडियां प्रदोष है ॥

२) व्यास का वचन भी इसी प्रकार का है ।

३) विश्वादर्श में-प्रदोषोस्तमयादूर्ध्वं घटिका त्रयमिष्यते ।

सूर्यास्त होने पर तीन घडियाँ प्रदोष है ॥

४) वत्सका कहना सूर्यास्त होने पर ४ घडियां प्रदोष है ॥

५) धर्मचिन्तामणि में-प्रदोषोऽस्तमयादूर्ध्वं घटिका द्वयमिष्यते ।

सूर्यास्त होने पर दो घडियां प्रदोष है ॥

सूर्यास्त के अनन्तर ६ घडियां भी प्रदोष है उन में से पहली दो घडियां उत्तम प्रदोष, मध्यम दो घडियां मध्यम प्रदोष, और अन्तिम दो घडियां अधम प्रदोष है । कई लोग ६ घडियों के अनन्तर भी अर्धरात्र तक जधन्य प्रदोष मानते हैं । कइयों ने रात्रि मान के तीन भाग करके पहले भाग को प्रदोष माना है । दूसरे को अर्धरात्र, तीसरे को विष्टि नाम से पुकारा है । जो हो—परन्तु यह बात निर्विवाद है, कि सूर्यास्त के अनन्तर ही प्रदोष होता है । रणवीर व्रतरत्नाकर में लिखा है । कि :—

या याः सन्निहिता नाड्यस्तास्ताः पुण्यतमा मताः ॥

जो जो नाडियां सूर्यास्त होने पर निकटवर्ती होती हैं । वह अधिक अधिक पवित्र है इस लिए जिस ने ६ घडियों का प्रदोष माना है । उस ने उत्तम, मध्यम, अधम तीन प्रकार के प्रदोषों को माना है । जिस ने चार घडियां प्रदोष माना है उस ने उत्तम और मध्यम प्रदोष का ग्रहण किया है ।

जिस ने दो घडियां प्रदोष माना है। उस ने उत्तम प्रदोष को ही ग्राह्य माना है ।

यह शिवरात्रि निर्णय समाप्त होने से पूर्व शिवरात्रि (हरराात्रि) व्रत को मनाने वाली कश्मीरिक हिन्दू जनता से निवेदन है कि मुनियों के वचन देश, काल, मर्यादा और देशाचार से भिन्न भिन्न देख पड़ते हैं यही कारण है कि समय समय पर इस व्रत के मनाने वालों में मत-भेद पाया जाता था अतः उस मत-भेद को दूर करने के लिए ही मण्डल ने समस्त शास्त्रों का जिन में इस व्रत की चर्चा है निरीक्षण कर जो सारांश निकाला है वह इस पुस्तक में अंकित है तथा धर्म-प्रेमियों के लिए ग्राह्य है ।

गोविन्द भट्ट

॥ ॐ शान्ति ३ ॥

समाप्त